(MIJ) 2017, Vol. No. 3, Jan-Dec **e-ISSN: 2454-924X; p-ISSN: 2454-8103**

साम्प्रदायिकता की समस्याएं और गांधी जी

डॉ. सुधीर कुमार

साम्प्रदायिकता मनुष्य के उस संकीर्ण और स्वार्थपरक विचारधारा का प्रतीक हैं जिससे धार्मिक समुदायों में परस्पर द्वेष और धृणा की भावना पनपती है एवं हिंसा की आग भड़काती है। यह हमारे अस्वस्थ मानसिकता तथा द्वेषपूर्ण विचारों की घोतक है। धर्म के नाम पर एक समुदाय की दूसरे समुदाय से अलग करना उनमें मतभेद और द्वन्द्व पैदा करना तथा संघर्ष की आग में झोंकना साम्प्रदायिकता का ही कार्य है। साम्प्रदायिकता की व्याख्या दो दृष्टिकोणों से की जा सकती है। संकुचित दृष्टिकोण से साम्प्रदायिकता का अर्थ दो धार्मिक समुदायों की वह भावना है जो उसे अलग करती हैं एवं हिसात्मक कार्य के लिए प्रेरित करती है। दो या दो से अधिक धार्मिक समुदायों के मध्य तनाव और हिंसा जिस मानसिकता या विचारधारा को जन्म देती है उसे सम्प्रदायिकता कहते हैं।

गांधी जी के प्रमुख कार्यक्रमों में से साम्प्रदायिकता की समस्या एक था। इसीलिए तो उन्होंने अपने रचनात्मक कार्यक्रमों की सूची में कौमी एकता को पहले स्थान पर रखा। उनके जीवन के अंतिम दस वर्षों के अवलोकन करने पर तो लगता है साम्प्रदायिक सद्भाव और गाँधीजी मानो पर्यायवाची हो गये थे। लगता है उनका जीवन साम्प्रदायिक सद्भाव के लिए ही समर्पित हो गया था। गांधीजी का विचार था कि साम्प्रदयिक विद्वेष धर्म की आड़ में फैलाया जाता है। जबकि साम्प्रदायवाद का धर्म से कोई लेना देना नहीं होता, जो भी असामाजिक तथा राष्ट्र विरोधी तत्त्व साम्प्रदायवाद को बढ़ावा देता है वे सही रूप में धार्मिक नहीं हो सकता। आचार्य विनोबा भी कहते है "हिन्दु और मुस्लिम आपस में लड़कर सोचते हैं कि अपने धर्म को लाभ पहुंचा रहे है, परन्तु वास्तव में वे दोनों ही अपने अपने धर्म को नष्ट कर रहे है। मैं यह भी मानता हूँ कि यह संघर्ष और हत्याएं धर्म की रक्षा नहीं कर सकती"।

बापू का मानना था कि सभी प्राणी एक दूसरे से रंग रूप में अलग हो सकते है। फिर अपने आप में अपने को तथा अपने ही धर्म को श्रेष्ठ मानना निन्दनीय एवं साम्प्रदायिक सद्भाव के लिए अनिवार्य नहीं है। बापू का विचार था की प्रेम के रास्ते पर चलाने के लिए संप्रायिक सद्भाव अनिवार्य है। बापू का विचार था कि साम्प्रदायिक विद्वेष राष्ट्र की अखंडता के लिए खतरा तो है ही, साथ ही इससे धन-जन की अपार हानि होती है, राजनीतिक एकता और स्थिरता में बाधा सामने आता है। खासकर चुनावों के समय प्रायः सभी दल के राजनेता साम्प्रदायिक आधार पर बोट मांगते हैं। गांधीजी ने इस खतरे से देशवासियों को आगाह किया है कि साम्प्रदायिकता की भावना बलवती होने से समाज में अराजकता छा जाती है और सब कुछ अस्त-व्यस्त हो जाता है। गांधीजी ने साम्प्रदायिक सद्भाव के लिए प्रयास भी किये और सुझाव भी दिये। उनका कहना था कि हमें गाँव-गाँव में शांति सेना का गठन करना चाहिए, जिसका मुख्य उद्देश्य गांव में तथा आस-पास के गाँवों और शहरों के बीच साम्प्रदायिक सद्भाव बना रहे। साम्प्रदायिकता की समस्या के समाधान के लिए यह भी आवश्यक है कि हम एक दूसरे के धर्म का आदर तो करें ही साथ ही हम

(MIJ) 2017, Vol. No. 3, Jan-Dec **e-ISSN: 2454-924X; p-ISSN: 2454-8103**

एक-दूसरे के पूज्य स्थल तथा अन्य कर्म काण्डों का भी सम्मान करें। हमें चाहिए कि अगर दूसरे सम्प्रदायों के रस्म रिवाजों में शामिल नहीं हो सकें तो कम-से-कम उन्हें बाधा नहीं पहँचायें। बापू का तो विचार था कि हम एक दूसरे के पर्व-त्योहारों, रस्म-रिवाजों में भी भाग लें और आपस में मिलजुल कर रवाना भी खायें। आपसी सद्भाव एक दूसरे के सुःख-दुःख में शामिल होने से भी कायम होता है। आज राजनेताओं के दाव-पेंचों द्वारा भी साम्प्रदायिकता एक समस्या के रूप की सही रूप में शिक्षा की व्यवस्था को मजबूत करने पर बल दिया था। उनका विचार था कि प्रारम्भ के कक्षाओं से ही विद्यार्थियों को सभी धर्मों की सत्यता की जानकारी देनी चाहिए। जिससे तथाकथित धार्मिक लोगों के बहकावे में आकार वे धार्मिक विद्वेष न फैलाते। शिक्षा व्यवसायपरक तो हो ही साथ ही शिक्षा नैतिकपूर्ण भी हो, जो व्यक्ति को नैतिकवान नागरिक बनाने में सक्षम हो। उनके विचार में अपनी सत्ता बनाये रखने के लिए ही ब्रिटिश सरकार ने 'फूट डालो और शासन करो' की नीति के तहत हमारे देश में साम्प्रदायिक दुर्भावना का प्रचार-प्रसार किया। ब्रिटिश शासन के पूर्व शायद ही सत्ता की लड़ाई ने अलगाव का रूप ग्रहण किया था। आम जनता सत्ता की लड़ाई से लगभग अछूती रहती थी। हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच साम्प्रदायिक विरोध की घटना और अलग होने का आन्दोलन ब्रिटिश शासन काल में ही अस्तित्व में आया एक अंग्रेज लेखक ने लिखा है कि "बेशक यह सत्य है कि यह फूट और विघटन भारत में न होती तो ब्रिटिश शासन भारत में जम नहीं सकती थी और न इतने समय तक टिक सकती"। हिन्दू-मुस्लिम वैमनस्य उसी विघटन का एक लक्षण है। यह भी सच है कि दोनों जातियों के बीच बैमन्सय ब्रिटिश राज्य में शुरू हुआ। पहले हिन्दू-मुस्लिम जनता शांति के साथ अपने-अपने देव स्थानों में साथ-साथ शांतिपूर्वक पूजा करते थे।

गाँधीजी, स्पष्ट लिखा है कि जब ब्रिटिश शासन नहीं था और जब अंग्रेज लोग यहाँ दिखाई नहीं पड़ते थे तब हिन्दू-मुस्लिम सिक्ख एक दूसरे से लड़ते ही नहीं थे। हिन्दू-मुस्लिम इतिहासकारों ने यह सिद्ध किया कि उस समय हमलोग मिलजुलकर शांति पूर्वक ही रहते थे और गाँव में तो हिन्दू-मुस्लिम आज भी नहीं झगड़ते। यह लड़ाई झगड़ा पुरानी नहीं है मैं हिम्मत के साथ कह सकता हूँ कि यह ब्रिटिश शासन के आगमन के साथ शुरू हुआ वहीं ब्रिटिश शासकों का अनुकरण आज के शासकों ने कर रखा है। यही कारण है कि दुर्भाग्यवश आजादी के वर्षों बाद भी साम्प्रदायिकता का सिर्फ विष-वमन कर रहा है। कुछ स्वार्थी लोग इस वैर भाव को बढ़ावा भी दे रहे हैं।

गांधीजी ने सन् 1924 में अपने स्वयं सेवकों को प्रतिज्ञा कराया "मैं भारत में बसने वाले सभी साम्प्रदायों हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाईयों की एकता में विश्वास करता हूँ और इसे बनाये रखने का शपथ लेता हूँ"। सन् 1930 के प्रतिज्ञा पत्र में इस बात का उल्लेख था कि कोई भी सत्याग्रही किसी झगड़े खासकर साम्प्रदायिक झगड़े का कारण नहीं बनेगा। साम्प्रदायिक दंगों के सुलझाने में किसी की तरफदारी नहीं करेगा। अगर वह हिन्दू है तो अन्य दूसरे धर्म के लोगों के साथ उदारता का व्यवहार करेगा और अगर उस पर कोई हमला करेगा तो उस पर बिना बदले की भावना के ही एक दूसरे की रक्षा करेगा। वह अपनी पूरी ताकत से हर ऐसी स्थिति को रोकेगा जो साम्प्रदायिक दंगे का कारण बन सकती है। ऐसी आशा सभी साम्प्रदायों के सत्याग्रहियों से की गयी।

गांधीजी ने हिन्दू और मुसलमान को निकट लाने के लिए अनेक कार्य किये। रोम्या रोलां ने लिखा है 1920 में गाँधीजी ने राष्ट्रीय विश्वविद्यालय गुजरात विद्यापीठ की स्थापना की। हिन्दू के लिए हिन्दू धर्म और मुसलमानों के लिए इस्लाम दोनों पर यह आधारित थी। इसका ध्येय भारत की भाषाओं की रक्षा करके उन्हें राष्ट्रीय भावना का श्रोत बनाना था। गांधीजी का विश्वास था

कि भारतीय संस्कृति एव सभ्यता का अध्ययन पश्चिमी विज्ञान के अध्ययन से कम आवश्यक नहीं है। संस्कृत, अरबी, पाली, मराठी इत्यादि के विस्तृत कोष का अध्ययन करने के बाद ही राष्ट्र की वास्तविक स्थिति का पता चल सकता है। गाँधीजी के अनुसार इन प्राचीन अनुभवों और परम्पराओं के आधार पर ही एक नयी सभ्यता का निर्माण हो सकता है। भारत में इतनी सभ्यताएँ आ गई उन सबको अनुकूल बनाकर उनमें से एक सर्वमान्य सभ्यता उत्पन्न करना ही उनका ध्येय था। स्वभावतः स्वेदेशी ढंग से होगी, जिसमें प्रत्येक सभ्यता को अपना उचित स्थान मिलेगा और कोई अकेली सभ्यता दूसरी सभ्यता पर अपना अधिकार नहीं डालेगी। हिन्दूओं को भी कुरान का अध्ययन करने को मिलेगा और मुसलमानों को भी हिन्दू शास्त्र का अध्ययन करने का अवसर मिलेगा।

गाँधीजी का विचार था कि अगर हिन्दू लोग सभी जातियों के बीच एकता चाहते हैं तो उसमें अल्पसंख्यक जातियों का विश्वास हासिल करने की हिम्मत होनी चाहिए। किसी भी बुनियाद पर आधारित सच्चा मेल नहीं होगा अगर दोनों एक दूसरे को हृदय से नहीं चाहेंगे। करोड़ों समान्यजन न विधान सभा का सदस्य होना चाहते हैं और न ही नगरपालिका परिषद के सदस्य बनना चाहते हैं यदि सत्याग्रह का ही उपयोग करना सीख गये तो हमें किसी भी अन्यायी शासक या अन्यायी कौम के विरूद्ध किया जा सकता है और किया जाना चाहिए। इसी तरह न्यायी शासक हमेशा अच्छा होता है फिर वह हिन्दू हो या मुस्लमान। हमें साम्प्रदायिक भावना को छोड़नी चाहिए। इसलिए इसमें बहुसंख्यक समाज को पहले-पहल अल्पसंख्यक जातियों में अपनी ईमानदारी के विषय में विश्वास पैदा करना चाहिए। मेल और समझौता तभी हो सकता है जब ज्यादा बलवान पक्ष दूसरे की तरफ देखे बिना कोई रास्ता अख्तियार न करें।

हिन्दू-साम्प्रदायिक एकता के लिए बेचैनी प्रकट करते हुए गाँधीजी ने कहा "अगर आप मेरा दिल चीरकर देखें तो पायेंगे कि मेरे दिल में लगातार चौबीस घंटे चाहे मैं सोता रहूँ या जागता रहूँ साम्प्रदायिक एकता के लिए प्रचवन या आध्यात्मिक प्रवचन चलते रहते हैं। इसका मैं प्यासा हूँ क्योंकि इसके बिना सच्चा स्वराज्य नहीं मिल सकता है"। गांधीजी कहते हैं कि मुझे अपने पिता का जमाना याद है जब राजकोट में हिन्दु और मुसलमान मिल जुलकर रहते थे और सगे भाई की तरह एक दूसरे के त्योहार में शामिल होते थे। और मेरा विश्वास है कि इस देश में वे दिन फिर लौटेंगे, परन्तु कौन जानता है कि हृदय की इस सच्ची प्रार्थना के इस काम को पूरा करने योग्य बन पाऊँ या नहीं। गाँधी जी ने अपने अंतिम जन्मदिन के अवसर पर कहा दिन है, लेकिन मेरे लिए तो आज यह मातम का दिन है मैं आज तक जिन्दा पड़ा हूँ इस पर मुझे खुद हैरत होती है। शर्म लगती है। मैं वही हूँ कि जिसकी जुबान से एक बात निकलती थी तो करोड़ों उसको मानते थे पर आज तो मेरी कोई सुनता ही नहीं है।

15 अगस्त को हमें स्वराज्य मिला गया लेकिन वह मेरे सपनों का स्वराज्य नहीं है मैं उसे स्वराज्य नहीं मानता। मेरे सपनों का स्वराज्य तो मिला ही नहीं यह कैसा स्वराज्य है, जिसमें हिन्दू मुसलमानों को अपना दुश्मन समझता है और मुसलमान हिन्दुओं और सिक्खों को। हम दुनिया में किसी को अपना दुश्मन बनाना नहीं चाहते और न हम किसी के दुश्मन बनना चाहते हैं यह है मेरे सपनों का स्वराज्य। ऐसा स्वराज्य अभी नहीं आया क्या हमारे भाई-भाई आपस में दुश्मन नहीं बुरा बनेंगे? अगर हम उपर उठना चाहते हैं तो हमें भाई-भाई बनकर रहना होगा लेकिन आज तो हम गिर गये हैं। हमारे दिलों में नफरत का खून भरा है। आज ईश्वर की नजर में दोनों ही गुनहगार है। जो हिन्दू करें वह मुसलमान को बुरा लगे। जो मुसलमान करे वह हिन्दू को बुरा लगे तो वह सच्चा स्वराज्य कैसे हो सकता है?

बापू के विचार में भारत में रहनेवाले सभी साम्प्रदायों के लोग भारत माता की सन्तान है। सन् 1946 ई. में उन्होंने हरिजन के एक लेख में लिखा था, जो भी इस देश में पैदा हुए हैं और 'जो भारत को अपनी मातृभूमि मानते है, फिर चाहे वे हिन्दू हों, पारसी हो, ईसाई हो, जैन या सिख हो, सब एक बराबर भारत माता की संतान है और इसलिए आपस में भाई-भाई है। वे सब एक ऐसे रिश्ते से बँधे हैं जो खून के रिश्ते से भी ज्यादा मजबूत है। देश में फैले साप्रदायिक दंगे से व्यपित होकर गांधीजी ने उपवास रख दिया। उनके उपवास से द्रवित होकर दोनों साम्प्रदायों के नेताओं ने उनके सामने शपथ लिया कि हम सभी मिलजुल अपने अपने कौमों को दंगे-फसादों के लिए नहीं उकसायेगें। इस अवसर पर गांधीजी ने उपस्थित लोगों से कहा "मैं और किसी कारण जिन्दा नहीं रहना चाहता कर रहेंगे जिन्दा रहता है तो इन्सानियत को ऊँचा उठाने के लिए। ईश्वर और खुदा की तरफ जाना ही इन्सान का फर्ज है। जुवान से ईश्वर, खुदा, सत श्री अकाल कुछ भी नाम लो वह सब झूठा है अगर दिल में वह नाम नहीं है तब एक ही हस्ती है तो फिर कोई कारण नहीं है कि हम उस चीज को भूल जायें और एक दूसरे को दुश्मन माने आज मैं आपसे ज्यादा कुछ कहने वाला नहीं हूँ"। आज के दिन से हिन्दू निर्णय कर लें कि हम झागडेंगे नहीं। मैं चाहूँगा कि हिन्दू कुरान पढ़े जैसे वे भागवत गीता पढ़ते है। सिख भी वहीं करें। मैं चाहूँगा कि मुस्लिम भाई-बहन भी अपने घरों में 'ग्रन्थ साहिब पढ़े उसके माने समझे जैसे हम अपने धर्म हैं। वैसे दूसरों के धर्म को मानें। उर्दू फारसी किसी भी जबान में बात लिखी हो मानते अच्छी बातें हो तो अच्छी बात है। जैसे कुरान शरीफ वैसे ही गीता और ग्रन्थ साहिब है।

गाँधीजी ने लिखाफत आन्दोलन में मुसलमानों का साथ देते हुए हिन्दू रित होने के नाते मुझे इस बात की चिंता होती है, यदि सात करोड़ मुसलमानों से मैं अपने धर्म को सुरक्षित रखना चाहता हूँ तो मुझे उनके धर्म को बचाने के लिए भी मरने को तैयार रहना चाहिए। यही बात हिन्दुओं के लिए भी सही है। जब तक हिन्दू मुसलमान एक नहीं होते तब तक स्वराज्य एक अर्थ-विहीन आदर्श है और गोरक्षा असंभव है। स्वार्थ सध जाने पर मुसलमान दगा देंगें, मैं ऐसा नहीं मानता। जो धर्म को मानते हैं वे दगा नहीं देते। हिन्दू अपना धर्म समझकर मुसलमानों की मदद करें और फल की आशा ईश्वर से रखें। मैं मुसलमानों के लिए मरकर उनके हृदय को पवित्र करने की उम्मीद रखता हूँ। यदि मुसलमान भाइयों का मामला कमजोर होता तो मैं उनके लिए मरने को कतई तैयार न होता। उनके मामले को भी बिल्कुल जानते हुए भी मैं सन्देश अथवा भयवश उनसे अलग रहूँ तो मैं अपने हिन्दूत्व को लजाता हूँ मेरा पड़ोसी धर्म लुप्त हो जाता है। गाँधीजी हिन्दू-मुस्लिम एकता के अपने प्रजाओं में यह कहते थे कि आज का प्रयत्न धार्मिक एकता का नहीं, बल्कि धर्म की भिन्नत होते हुए भा हृदय की एकता का है। कोशिश यह है कि सनातनी हिन्दु अपने धर्म के प्रति सजग रहते हुए कहर गुसलमान का आदर करें। उसकी सच्चे हृदय से उन्नति चाहे।

साम्प्रदायिकता की समस्या के निदान के लिए पूरे देश में आर्थिक समानता पर भी पूरा बल दिया। बेरोजगारी और भूखमरी भी सभी साम्प्रदायों के बेरोजगार और भूखों को हिंसा की ओर उन्मुख करने में प्रभावी भूमिका निभाते हैं। इसलिए उन्होंने सम्पत्ति के समवितरण हेतु विकेन्द्रीयकृत उत्पादन का तरीका सुझाया। इस तरीके से देश के सूदूर गाँवों के प्रत्येक लोगों के पास धन पहूँचना आसान होगा। सामान के विकेन्द्रीकृत उत्पादन हेतु बापू ने कुटीर उद्योग एवं खादी ग्रामोद्योगों को अपनाने का सुझाव दिया। उनके विचार में नैतिकपूर्ण अर्थनीति जो अर्थ नीतिकि सर्वोदय समाज की अर्थनीति होगी। समाज के सभी प्रकार के हिंसा को दूर करने में सक्षम है।

बापू यह अच्छी तरह जानते थे कि आजाद भारत में राजनीतिक स्वार्थ के लिए भी साम्प्रदायिक तनाव होते रहेंगे। इसलिए उन्होंने स्वार्थ परक राजनीति की जगह नीति पूर्ण राजनीति की बात कही, जहाँ स्वार्थ के बदले परमार्थ के बारे ज्यादा सोचा और किया जाता है। सर्वोदय की राजनीति जो नैतिकता पर आधारित होगी हमेशा दुसरो की भलाई ही करता है। ऐसी राजनीति में साम्प्रदायिक हिंसा तो नहीं ही होगी इसमें किसी भी प्रकार के हिसा के लिए कोई स्थान नहीं है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि गांधीजी साम्प्रदायिक समस्या के समाधान के लिए आजीवन संघर्ष करते रहे।

ग्रन्थसूची :-

1. आओ सन, धमः एक पुनर्विचार- समकालीन सृजन।

2. त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका, सम्पादक शभुनाथ 20, बालामुकद मक्कर रोड, रोम्या रोलां- महात्मा गांधी।

3. गोपीनाथ दीक्षित, गाँधीजी की चुनौती, कम्युनिज्मकों, प्रकाशक- शांतिलाल हरिजीवनशाह नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद।

4. देसाई, नन वायोलेन्स इन पीस एन्डवार, इन्ट्रोडक्शन IV

5. यंग इंडिया 3 सितम्बर, 1925

6. विवेकानन्द, धर्म तत्व, प्रकाशक-रामकृष्ण मठ, नागपुर।

7. महात्मागांधी यंग इंडिया, 11 अगस्त, 1920

8. विवेकानन्द साहित्य।

9. फ्रांम यरवदा मंदिर।

10. डॉ राधाकृष्णन- रीलीज्न एण्ड सोसाइटी सी०ए०एलबुड: दि सोशल प्राब्लम (न्यूयॉर्क), 1918

11. बटुडरसेल: ॲथारिटि एण्ड दि इंडिविजुअल, 1948-49

12. फासिस विलिमन- गांधी: दि मास्टर।

13. डॉ. एस. राधाकृष्णनः सत्य की खोज।

14. डॉ. रामजी सिंह- गांधी दर्शन मीमांसा।

15. वर्टेडरसेल -ऑथारिटि एण्ड दि इंडिविजुअल 1948-49

(MIJ) 2017, Vol. No. 3, Jan-Dec **e-ISSN: 2454-924X; p-ISSN: 2454-8103**

16. मदास रिपोर्ट, सोशलिस्ट पार्टी आफ इण्डिया का वार्षिक अधिवेशन 1950

17. महाभारत, शांतिपर्व, "नास्ति सत्य समंतप" तुलना कीजिए सांच बराबर तप नहीं कबीर महाभारत शांति पर्व, "सत्य ब्रहम सनातनम" । तुलना कीजिए- महात्मा गांधी आत्मकथा ।

18. महात्मागांधी हरिजन 6 जुलाई 1940